# जल जीवन जल प्राण

शिवानन्द सिंह "सहयोगी"

जल जीवन जल प्राण है जल है अमृत धार
जल ही जीवन का सहज एक अमिट श्रृंगार
जल जीवनदायी कला।

पानी का जल स्रोत जब उगल रहा है रेत
मधुवन है सूखा पड़ा सूखा है साकेत
सूखा कंठ कबीर का।

भूतल का जल घट गया रीता है पाताल
शेष नाग की नागिनी कर बैठी हड़ताल
प्यासे खड़े क्मंडली।

गंगा तेरे पाट में पानी बचा न शेष
खड़ा तुम्हारे घाट पर भष्मी का अवशेष
कहाँ बहाये फूल वह।

जल के वातावरण में दूषण का छिड़काव
जीवलोक है तड़फता सहकर असह विभाव
संकट में जीवन पड़ा।

टोंटी तक खाली पड़ी पंछी तक बेचैन
सात-नहाना कर रहे मानवता के नैन
जनमानस चिथड़ा पड़ा।

सोच रही है जिन्दगी अब आना है काल
पानी-पानी कर रहा यह जीवन खुशहाल
किशन-कन्हैया हो कहाँ।

रोज ततैया पंख चढ़ आती नल के पास
नल भी तो प्यासा खड़ा मुखड़ा लिए उदास
मौज मनाती छिपकली।

धरती की छाती फटी हुए हजारों छेद
पूजा पर बैठे हुए पोथा पोथी वेद
प्रचलन कूदा कूप में।

सावन मौनी हो गया भादों का उपवास
बाद परदेशी हुए आता पास न खास
आँख दिखाए रोशनी।

हरियाली की छिन गई सुभग बंसती सांस
खेतों के उल्लास पर है बस्ती की गांस
हवा विषैली हो गई।

सूरज पहले से रहा पानी का चितचोर
सागर का पानी पिया बादल भी मुंहचोर
चला नहाने चाँद पर।

गागर से गायब हुई पानी की जलधार
बोतल है भरने लगी पानी से अँकवार
चढ़ी प्यास के होंठ पर।

मानव जीवन पर रहा पानी का उपकार
मानव ही अंधा हुआ डाला कलुष विकार
मछली जाने व्याकरण।

पानी का दर्पण नहीं आज निखरता रूप
अंधे-अंधे हो गये गाँव-गली के कूप
उलटी गिनती गिन रहे।

पानी पानीदार है पानी है भरपूर
उलटपुलट बस हो गया मानव का दस्तूर
दोषी मानव लालची।

इतना है जब कर गया उन्नति अब विज्ञान
पर पानी की देह पर दूषण का परिधान
दंश सताये प्रलय का।

पानी की रक्षा करें हो यह जीवन गेय
पानी ऐसा तत्व है होता सदा अजेय
रहिमन पानी राखिये

सावन की हरियालियाँ होने लगी तबाह
मौसम करने लग गया जाकर कहीं निकाह
भादों के बादल भगे।

शोरशराबा में फँसा मन संवेदनशील
सन्नाटा की ओट में हानि-लाभ की झील
तरोताजगी हवा की।

संपर्क करें:
**शिवानन्द सिंह "सहयोगी"**
'शिवाभा' ए-233, गंगानगर
मेरठ - 250 001
मो.नं. 09412212255